सम्पादकीय

सम्पादक की कलम से,
भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका के सुधी पाठकों,

इस अंक में मैं डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के बारे में चर्चा करना चाहता हूँ जिनके आकस्मिक निध्न की सूचना मुझे उस समय प्राप्त हुई जब मैं किसी दूसरे विषय पर लिखने का विचार कर रहा था। उद्भट विद्वान, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, 'मिसाइल मैन' तथा 'जनता के राष्ट्रपति', अबुल पाकिर जैनुल आब्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में एक निर्ध्न मुसलमान परिवार में हुआ। रामेश्वरम में ही प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने त्रिाचनापल्ली में सेन्ट जोजपफ विद्यालय, जो कि मद्रास विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था, से भौतिक विज्ञान में स्नातक की उपाध् िप्राप्त की। तत्पश्चात्, उन्होंने मद्रास प्रौद्योगिकी संस्थान में प्रवेश लिया और वहाँ एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक का पाठ्यक्रम पूरा किया। प्रारम्भ में वे भारतीय वायुसेना में यु के विमानों के पाइलट बनना चाहते थे और उसके लिये वे चयनित भी हुये, परन्तु परिणाम में उनका नवाँ स्थान था और उस समय पाइलेट के आठ ही पद थे, अतः वे अपनी प्रारम्भिक इच्छा को पूर्ण न कर सके। तत्पश्चात्, वे 'इसरो' (इण्डियन स्पेस रिसर्च आर्गनाइजेशन) की ओर आकर्षित हुये, जहाँ उन्होंनें परियोजना निदेशक के रूप में भारत के प्रथम स्वदेश निर्मित प्रेषण वाहन, 'एस0एल0वी0–ￌￌ' के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। इसी वाहन के माध्यम से जुलाई 1980 में 'रोहिणी' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट प्रेषित किया गया जिसके द्वारा भारत विश्व 'स्पेस क्लब' का एक सदस्य बन गया। इसरो में दो दशक तक कार्य करने के उपरान्त, कलाम ने डिपफेन्स रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट आर्गनाइजेशन (डी0आर0डी0ओ0) में 1982 में इन्टीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल के मुख्य कार्यपालक का उत्तरदायित्व संभाला। इस पद पर वे 'अग्नि' तथा 'पृथ्वी' मिसाइलों के विकास तथा कार्यान्वयन के लिये उत्तरदायी थे। उन्होंने अनेक अन्य संस्थाओं के सहयोग से इस क्षेत्रा में स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक वे डी0आर0डी0ओ0 के सचिव तथा भारत के रक्षामंत्री के मुख्य परामर्शदाता थे। इन पदों पर उन्होंने सामरिक मिसाइल सिस्टम का आयुधीकरण तथा डिपार्टमेण्ट ऑपफ एटोमिक एनर्जी के सहयोग से 'पोखरन–2' के आणविक परीक्षण का सफलतापूर्वक संचालन किया। उन्होंने नवम्बर 1992 से इसी माह 2001 तक भारत सरकार के मुख्य परामर्शी तथा मंत्री की भूमिका निभाई। इन पदों पर उनके दायित्वों में था मिसाइल के क्षेत्रा में नीति–निर्धरण तथा कौशल का विकास। भारत में मिसाइल विकास के क्षेत्रा में उन्होंने इतना महत्वपूर्ण योगदान किया कि पूरे देश में घर–घर उन्हें जाना जाने लगा और उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हुये जिसमें 1981 में पद्मभूषण, 1990 में पद्म विभूषण तथा 1997 में भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' सम्मिलित हैं। वे भारतीय गणतंत्रा के ग्यारहवें राष्ट्रपति बने तथा वर्ष 2002 से 2007 तक इस सर्वोच्च संवैधनिक पद पर रहे। इससे अवकाश प्राप्त करने के. पश्चात भी वे लोगों, विशेषकर युवा पीढ़ी को विभिन्न संस्थानों में व्याख्यान देकर प्रेरित करते रहे। उन्होंने अत्यधिक लेखन कार्य किया तथा उनके द्वारा रचित कुछ प्रमुख ग्रन्थों के नाम हैं : 'इण्डिया 2020' (1998), 'विंग्स ऑफ फायर' (1999), 'इग्नाइटेड माइन्ड्स' (2002), 'डायलॉग्स ऑन परपज ऑपफ लाइपफ' (2005) तथा 'ट्रान्सपफर्मिंग ड्रीम्स इण्टू ऐक्शन्स' (2013)। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें इतनी लोकप्रिय हुईं कि उनके प्रकाशित होते ही उनकी समस्त प्रतियां अतिशीघ्र बिक जाती थीं। डॉ0 कलाम का सारा जीवन बड़ा सादा था तथा वे अविवाहित रहे। 27 अगस्त 2015 को शिलांग के भारतीय प्रबन्ध् संस्थान (आई0 आई0 एम0) में व्याख्यान देते हुये उन्होंने अंतिम साँस ली।

वे लीक से हटकर राष्ट्रपति थे। वे नव भारत के मूर्त रूप थे। महत्वाकांक्षी नव भारत के लिये वे ऐसे राष्ट्रपति थे जिनका कोई राजनीतिक रुझान न था। उनके माथे पर चाँदी के समान चमकती तथा गोल लटें, उनकी टिमटिमाती आँखें तथा सदाबहार मुस्कान, एक अलग प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न करती थीं। राष्ट्रपति भवन छोड़ने के बहुत बाद भी वे अत्यध्कि लोकप्रिय रहे। इसका

एक उदाहरण है कि निध्न पर उनके सम्मान में अमेरिका के राष्ट्रपति के आध्किारिक निवास 'व्हाइट हाउस' में भी अमेरिकी ध्वज को आध झुका दिया गया। उनकी लोकप्रियता का कारण यह था कि वे वैज्ञानिक तथा अन्य जटिल विषयों को अत्यधिक सरल तथा स्पष्ट शब्दों में व्यक्त कर सकते थे। उनके संदेश इतने प्रभावशाली थे कि युवा वर्ग स्वतः उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि वे जब मेरे विश्वविद्यालय– लखनऊ विश्वविद्यालय– में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान आये थे, तो छात्राों तथा शोधर्थियों के बीच खुले दिल से घूमे तथा उनसे उनके कार्यों के बारे में चर्चा की। वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें दूसरों की प्रगति से ईर्ष्या नहीं होती थी, वरन् वे उनकी प्रशंसा करते थे। इसका एक उदाहरण है जब उन्हें मेरे विश्वविद्यालय के द्वारा 'मानद उपाधि' देने का प्रस्ताव दिया गया तो उन्होंने किसी अन्य का नाम प्रस्तावित किया, क्योंकि उनके अनुसार उन्होंने उनसे कहीं अध्कि योगदान किया। इसी प्रकार उनका विचार था कि वे नहीं, वरन् एक दूसरे भारतीय वैज्ञानिक, नोबल पुरस्कार के योग्य हैं। जो कोई भी नवभारत के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखता था वह डॉ0 कलाम को सुनना चाहता था। चूँकि वे सामान्य परिवार में जन्म लेकर अपने प्रयास से इतने ऊपर गये, अतः सामान्य लोगों, विशेषकर छात्राों से अतिशीघ्र तादात्म्य स्थापित कर लेते थे। अध्किांश लोग उन्हें एक अध्यापक, वैज्ञानिक तथा राष्ट्रपति के रूप में जानते हैं, परन्तु वे एक रोग–हरक भी थे। जब अनेकों ने यह प्रश्न उठाया कि एक ओर तो भारत अपनी आधे आबादी को भोजन नहीं दे पा रहा है, वहाँ राकेट तथा मिसाइलों पर इतना अध्कि व्यय करना कहाँ तक उचित है, तो कलाम ने विज्ञान के लाभों की ओर ध्यान दिलाया और वह इस प्रकार कि उन्होंने मिसाइलों में प्रयुक्त उच्च स्तरीय इस्पात से स्वास्थ्य सुधर के क्षेत्र में दो उत्पादों के विकास में सहायता प्रदान कर क्रान्ति उत्पन्न कर दी। ये दो उत्पाद थे, प्रथम, हृदय की शल्य क्रिया में प्रयुक्त 'स्टेण्ट' को खरीदने योग्य बनाना तथा द्वितीय, ऐसे 'कैलिपर्स' का निर्माण जिसके द्वारा पोलियो ग्रस्त बच्चे आसानी से चल सकें। उनके इन प्रयोगों से 'स्टेण्ट' रू0 5,000/– के स्थान पर मात्रा रू0 10,000/– में मिलने लगा, क्योंकि अब विदेशी के स्थान पर स्वदेश निर्मित स्टेण्ट मिलने लगे। इसी प्रकार मिसाइलों में प्रयुक्त 'कार्बन सम्मिश्रणों' से ऐसे कैलिपर्स का उत्पादन होने लगा जो पुराने चार किलोग्राम के कैलिपर्स के स्थान पर 400 ग्राम वजन के हो गये। इन उत्पादों से कलाम इतने अभिभूत हुये कि उन्होंने कहा कि जीवन भर वे लोगों की हत्या करने वाली मिसाइलों का विकास करते रहे और अब अपने अन्तिम पड़ाव में वे ऐसा कार्य कर रहे हैं जो लोगों को जीवन देगा।

किसी भी रूप में वे राष्ट्रपति पद के लिये एक अनोखे व्यक्ति थे। वे राजनीति से नहीं आये थे। वे अपने पूर्ववर्ती डॉ0 राधकृष्णन तथा डॉ0 जाकिर हुसैन के समान विद्वान नहीं थे। परन्तु, जिस प्रकार उन्होनें राष्ट्रपति के पद पर प्रभाव डाला, वह अपने में निराला था। उन्होंने एक अलंकारिक राष्ट्रपति को लोकप्रिय प्रतिमा बना दिया। इसके दो कारण थे। प्रथम, उन्होंने उन औपचारिकताओं को तिलांजलि दे दी जो कि राष्ट्रपति और एक आम आदमी के मध्य दीवार के रूप में थीं। द्वितीय, प्रत्येक कार्य को वे एक 'मिशन' का रूप दे देते थे। उन्होंने अपने राष्ट्रपति पद को भी गम्भीरता से लिया। उसी प्रकार जैसे कि वे अपने वैज्ञानिक प्रयोगों को लेते थे तथा सदैव यह प्रयास किया कि ब्रिटिश सम्राट के अनुकरण पर बने राष्ट्रपति पद में कुछ परिवर्तन ला सकें। उन्होंने राष्ट्रपति भवन के समारोहों में बन्द गले के कोट को पहनने की अनिवार्यता समाप्त कर दी। वे मेहमानों से मिलने के लिये अक्सर अपने सुरक्षा कवच से बाहर चले जाते थे। वे बच्चों को इतना चाहते थे कि पत्राकारों ने उन्हें 'लोगों का राष्ट्रपति' नाम दे दिया। उन्होंने राष्ट्रपति भवन के समारोहों में कुछ चुने हुये व्यक्तियों को बुलाने की परम्परा को तिलांजलि दे दी। किसी वर्ष उन्होंने खिलाड़ियों, किसी वर्ष सरपंचों तथा किसी वर्ष डाक बाँटने वालों को आमंत्रिात किया। जब प्रत्येक वर्ष राष्ट्रपति भवन का मुगल गार्डेन आम जनता के लिये खुलता था, अक्सर डॉ0 कलाम वहाँ आने वाले लोगों से बातचीत करने पहुँच जाते थे। उन्होंने देश के कई भागों की यात्राायें कीं और जहाँ भी जाते, वे मात्रा औपचारिक समारोहों तक सीमित नहीं रहते, वरन् छात्राों से विचारों के आदान–प्रदान का एक कार्यक्रम अवश्य रखते।

प्रत्येक व्यक्ति जो राष्ट्रपति बना, उसने इस पद पर अपनी कोई न कोई छाप छोड़ी। कलाम का योगदान यह है कि उन्होंने राष्ट्रपति के पद तथा जनता के बीच की दूरी को कम कर दिया। उन्होंने दर्शाया कि किस प्रकार राष्ट्रपति नेतृत्व तथा प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

(सी0पी0 बर्थवाल)